शाहाबाद तहसील के मामोनी सहराने की रहने वाली ढाई साल की रोशनी सामान्य बच्चों जैसी नहीं दिखती। वह खड़ी होने के लिए मशक्कत करती है, लेकिन शरीर में खून से सिकुड़ते हाथ पैर उसे सहारा नहीं दे पाते। कारण जन्म से शारीरिक कमजोरी की जकड़ में है। यानी कुपोषित। बेहद ही दुबले पतले शरीर का वजन मात्र छह किलो। रोशनी उन अभागे बच्चों में से एक है जिनके परिजन उसका इलाज करवाने कुपोषण उपचार केंद्र (एमटीसी) जाने से कतराते हैं।

रोशनी के पिता सियाराम सहरिया मजदूरी करते हैं। महीने में 15-20 दिन ही काम कर पाते हैं। तीन सदस्यों का परिवार। रोशनी को घर में भरपूर भोजन नहीं मिल पाता। दूध का स्वाद तो उसने चखा तक नहीं। न मां गायत्री उसे दूध पिला पाई और न ही घर से कभी उसे दूध मिला। घर में रोज पांच रुपए का दूध खरीद कर लाया जाता है। उसी दूध से चाय बनाकर पूरा परिवार पी लेता है। रोशनी को दूध दे दिया तो चाय नहीं बन पाएगी। घर में पशु भी नहीं है। न ही परिवार का राशन कार्ड बना हुआ है। सहरियाओं को मिलने वाले सरकारी लाभ से भी ये परिवार वंचित है। रोशनी की मां उसे एमटीसी लेकर नहीं जा रही है। कहती है बच्ची के साथ मैं चली गई तो पीछे से मेरे पति को खाना बनाकर कौन देगा। घर का कामकाज कौन करेगा। दो साल की आशा की कहानी भी ऐसी ही कुछ है। वह भी जन्म से कुपोषित है। किशनगंज तहसील के खैरूना गांव में रह रही है और खैरवा समुदाय से ताल्लुख रखती है। जन्म के समय उसका वजन डेढ़ किलो था। अभी वजन है छह किलो। आशा की मां बन्नो के बार बार कहने पर भी उसके पिता रामप्रसाद उसे लेकर कुपोषण उपचार केंद्र नहीं जाते। उन्हें आशा के इलाज की बजाय अपनी दो वक्त की रोटी की चिंता है। कहते हैं इसकी मां हॉस्पिटल चली जाएगी तो मेरे लिए खाना कौन बनाएगा। मैं मजदूरी करके चार बच्चों को पढ़ाऊं लिखाऊं या इसका इलाज करवाऊं। आशा के घर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता पाना बाई बार बार आकर समझाती है। एमटीसी जाकर आशा का इलाज करवाने के लिए कहती है लेकिन परिजनों के जूं तक नहीं रेंगती। मामोनी गांव की दो साल की खुशी के परिवार वाले भी उसे दोबारा कुपोषण उपचार केंद्र ले जाकर इलाज नहीं करवाना चाहते। कहते हैं एक बार इलाज करवा कर ले तो आए। बार बार क्या इलाज करवाए। पिछले बार ही एमटीसी में दस दिन रहने पर पांच सौ रुपए मिले थे। क्या फायदा जाने में। मजदूरी करने जाए या इसे लेकर जाए। इसके साथ किसी को कुपोषण उपचार केंद्र पर रहना भी होगा। इतने दिन तक घर का कामकाज कौन करेगा। गांव में ही बंगाली डॉक्टर से इलाज करवा लेंगे। खुशी जन्म से ही कुपोषित है। जन्म के समय उसका वजन लगभग डेढ़ किलोग्राम था। एक साल की उम्र में उसे शाहाबाद कुपोषण उपचार केंद्र में भर्ती करवाया। करीब दस दिन तक वहां रही। उसका वजन भी बढ़ा लेकिन छह किलोग्राम से ज्यादा नहीं। कुपोषण उपचार केंद्र से वापस आने के बाद उसकी सेहत पहले जैसी ही हो गई। कारण उसे वो उचित खुराक/पोषाहार नहीं मिल पाया जिसकी उसे जरूरत थी। आंगनबाड़ी से मिलने वाले सूखे पोषाहार को कटोरी में डालकर खिला देते हैं। कभी हलवा या पका कर उसे खिलाया ही नहीं। दिन ऐसे ही कट रहे हैं लेकिन खुशी की सेहत की फिक्र किसी को नहीं है। चाहे कितना ही आग्राह करें ये जाएंगे तो अपनी मर्जी से ही। इन जैसे कुछ और भी बच्चे हैं। इनके ही आसपास के गांवों में। गौरतलब है कि बारां जिले में शिक्षा, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े क्षेत्र कुपोषण का दंश झेल रहे हैं। अभिभावकों के दिहाड़ी मजदूरी करने से उनके बच्चों को पर्याप्त पोषण व उपचार नहीं मिल पाता है। ऐसे में बच्चे कुपोषित से अति कुपोषित होकर कई बीमारियों की गिरफ्त में आ जाते हैं और समय पर उपचार नहीं मिलने से असमय ही दम तोड़ देते हैं। मजदूर परिवारों के समक्ष बच्चों को 10-15 दिन अस्पताल में भर्ती कराने के दौरान रोजगार नहीं होने से परिवार पालन का संकट आ जाता है। इसके चलते अधिकांश अभिभावक बच्चों की स्थिति गंभीर होने पर भी उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती नहीं कराते हैं। इस समस्या को देखते हुए वर्ष 2006 में कुपोषण उपचार केंद्र शुरू किए जाने के बाद यूनिसेफ की ओर से कुपोषण उपचार केंद्र में परिजन को 50 रुपए प्रतिदिन ठहरने व 35 रुपए प्रतिदिन भोजन के लिए देना शुरू किया था। अब परिजनों को 135 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से दिए जा रहे हैं। साथ ही बच्चों के पौष्टिक पोषाहार व एक परिजन को दो समय का भोजन दिया जा रहा है। हाल में 22 मई 2013 को राज्य सरकार ने आदेश जारी कर सहरिया परिवारों के लिए यह राशि 200 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से दिए जाने के आदेश दिए हैं। अधिकांश भत्ते से मजदूरी ज्यादा होने से परिजन अतिकुपोषित बच्चों को कुपोषण उपचार केंद्र में भर्ती कराने से कतराते हैं। प्रोत्साहन राशि में वृद्धि होने के बाद भी बच्चों के परिजन उन्हें बीच में ही कुपोषण उपचार केंद्रों से ले जा रहे हैं।(इंक्लूसिव मीडिया फैलोशिप के अध्ययन का हिस्सा है)

© CopyRight Pressnote.in | A Avid Web Solutions Venture.